सं० भ्रो०वि०/भ्रम्बाला/9-86/15389 ---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि सिंचवे, दी डिसिट्किट रैंड श्रास सोसायटी, कुल्क्षेत्र के भामिक कुमारी राधमा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधौरिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विकाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना बांछ ीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक बिवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1985, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

वया कुमारी राधमा की सेवामों का समाप्त न्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो ववह किसँ राहत का हकदार है ?

सं ओ विं | एफ.डी. | 15395 - च्विंक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं फरीदाबींद मिश्रित प्रशासन, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री पूरत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोणिक विवाद है;

ं श्रीर चुंकि हिरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं 5 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं 5 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवैरी, 1958 हारा उक्त अधि- ' नियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्ण्य एवं पंचाट तीन मास में देते हुत् जिदिंग्ड करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा संबंधित मामला है:--

वया श्री पूरन की सेवाओं का समापन न्यामोचित तयां के शिव नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?
सं श्री०वि०/सोतीपतंं/18-56/15401.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन श्रायुक्त,
हरियाणा, चण्डीगढ़; (2) जनरल मैंनजर, हरियाणा रोडवंज, सोतीपत, के श्रीमक श्री रोहतास सिंह तथा उसके प्रवन्धकों
के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीसोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की ल्पश्चारा (1) के खण्ड (ग्र) द्वारा प्रदान की गई शिन्तमों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यणाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठिनियम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित, नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास, में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच याती विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री रोहतास सिंह, पुत श्री करतार सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संब्धों विविश्वम्बाला / 13-86 / 1540 9 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी ब्राफिसर हन्चार्ज सैन्द्रल सोयल एण्ड वाटर कन्जरवेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इन्स्टीच्यूट रिसर्च सैंटर, सैन्टर-27, चण्डीगढ़, 2. दी सीनियर टैकनीकल ब्रिसिस्टैन्ट. सैन्ट्रल सोयल एण्ड वाटर कन्जरवेशन रिसर्च ट्रेनिंग इन्स्टीच्यूट रिसर्च फार्म, मन्सा देवी, डाकखाता मनीमाजरा, पंचकुला : (ब्रम्बाला), के श्रमिक श्री मून्ता लाल तथा उसके प्रवत्धकों के मध्य इसमें इसके द्वाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

. श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यकाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीक्षोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा स्वारा श्रिक्ष स्वना सं 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादशस्त या उससे मुम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकके बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री मुन्ता लाल की सेवाओं समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

जें० पी वरतन,

उप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विमाग ।

20790 CS(H)-Govt. Press, U.T., Chd.